गंगा प्रसाद अरुण _____

जन्म-तिथि : 4 जनवरी 1947.
जन्म स्थान : पड़रिया, बुढ़वल, काराकाट, रोहतास(बिहार).
शिक्षा : स्नातक (हिन्दी प्रतिष्ठा)
भाषा-विधा : हिन्दी- भोजपुरी (गीत- मनगीत/ गजल / ललित गद्य).
प्रकाशन : हिन्दी में एक/ भोजपुरी में चार.
संपादन : हिन्दी- भोजपुरी में दर्जनाधिक पत्र-पत्रिका/पुस्तक/स्मारिका.
सम्पर्क : 21-बी रोड-1, जोन-4, बिरसानगर, जमशेदपुर- 831019
मो 9234872041 / 7761802074

००१

गाँव लुटाइल फूलन के!
अबहीं राज बबूलन के!

झुरके आदमखोर हवा,
मस्ती रेत – बगूलन के!

धज्जी - धज्जी रोज उडे,
आइन – आन - उसूलन के!

छोड़ गुलाबन के अँगना,
गंध चलल तिर शूलन के!

मझधारे नइया बूड़ल,
दोष लगावलत कूलन के!

कब तक धाई मन हिरना,
मातल मरु भ्रम भूलन के!

***

००२

चमत्कार बा, हाला नइखे
तनिको गड़बड़झाला नइखे!

ई विकास के राज - सड़क ह,
कहवाँ ऊँचा - खाला नइखे!

कवनो अइसन जगह बताईं
जहवाँ हवस - हवाला नइखे!

छोपनी नइखे केकरा आँखे,
किनका मुँह पर ताला नइखे!

चान - सुरुज उनके घर बंदी,
एने कहूँ उजाला नइखे!

कवन गली, कवना चौराहे,
जमकल बजकत नाला नइखे!

जेने कोड़ीं, तेने पाईं
कहवाँ घूस - घोटाला नइखे!

***

दुआ - दवाई मर्ज हो गइल!
कुल मौसम खुदगर्ज हो गइल!

गीत - गवनई पहिले अइसन,
नएका - नएका तर्ज हो गइल!

अनका खातिर दरद सहेजीं,
अपना खातिर कर्ज हो गइल!

भात - भवद्दी के चक्कर में,
एगो खुन्नस दर्ज हो गइल!

जब - तब लंगी ढाही मारल,
अब अपननि के फर्ज हो गइल!

लकड़ी आम, घीव जजमानी,
स्वाहा में का हर्ज हो गइल!

***